

योएल की पुस्तक तथा लाओदीकियाई सेवेंथ-डे एडवेंटिस्ट कलीसिया - संख्या पैतालीस

Jeff Pippenger

2026-02-12

संख्या पैतालीस

समीक्षा

लैव्यव्यवस्था अध्याय तेईस, एक लाख चवालीस हजार के पिन्तेकुस्तीय काल के भीतर निहित तीन परीक्षाओं को चिह्नित करता है। मण्डपों के पर्व के प्रथम दिन को पिन्तेकुस्त के दिन के साथ, और फिर मसीह के स्वर्गारोहण से पूर्व शिष्यों को साक्षात् सिखाए गए चालीस दिनों को पहली उपज के दिन के साथ संरेखित करना, ऐसा समग्र ढाँचा निर्मित करता है जो तीन स्वर्गदूतों के संदेशों का प्रतिनिधित्व करता है।

जब 'मृत्यु, दफ़न और पुनरुत्थान' को तीन चरणों वाले एक ही भविष्यसूचक मार्गचिह्न के रूप में लागू किया जाता है, जैसा कि इसका निरूपण मसीह के बपतिस्मा द्वारा होता है, तो हम पाते हैं कि प्रथम फल के दिन हुए पुनरुत्थान के पाँच दिन पश्चात् अखमीरी रोटी के सात-दिवसीय पर्व का समापन एक पवित्र सभा के रूप में होता है। इस प्रकार, मसीह के पुनरुत्थान, जो प्रथम फल की भेंट के साथ संगत है, के बाद पाँच दिनों की एक अवधि आती है।

उस संरचना के अंत में, जो झोपड़ियों के पर्व के प्रथम दिन को पिन्तेकुस्त के दिन के साथ संरेखित करके निर्मित की गई है, तीन चरणों वाला एक अन्य मार्गचिह्न है, जिसके पश्चात् पाँच दिन भी आते हैं, जो पिन्तेकुस्त तक ले जाते हैं।

उन दोनों 'तीन-चरणीय मार्गचिह्नों, जिनके बाद पाँच दिन आते हैं,' के बीच तीस दिनों का एक कालखंड है। जब हम डेरों के पर्व के प्रथम दिवस को पेन्तेकुस्त के दिवस के साथ संरेखित करते हैं, तब हम समझते हैं कि डेरों के पर्व से पाँच दिन पूर्व प्रायश्चित्त का दिन था। प्रायश्चित्त के दिन से दस दिन पूर्व तूरियों का पर्व था। पहिलौठे फल के दिन उसके पुनरुत्थान के उपरांत मसीह का चालीस दिनों तक प्रत्यक्ष रूप से शिक्षण, इस प्रकार संरेखित होता है कि वह तूरियों के पर्व के पाँच दिन बाद और प्रायश्चित्त के दिन से पाँच दिन पहले पड़ता है।

उनके 'मरण, समाधि और पुनरुत्थान' का त्रि-चरणीय मार्गचिह्न, जिसके बाद खमीर-रहित रोटियों के पर्व की समाप्ति तक पाँच दिन आते हैं, फिर तीस दिन बाद दोहराया जाता है, जब 'तुरहियाँ, स्वर्गारोहण और न्याय' का त्रि-चरणीय मार्गचिह्न घटित होता है, और उसके उपरांत पेन्तेकोस्त तक पाँच दिन होते हैं। आरंभिक त्रि-चरणीय मार्गचिह्न को तीन चरणों वाले एक ही मार्गचिह्न के रूप में सहजता से परिभाषित किया जा सकता है, क्योंकि इसे इसी प्रकार मसीह के बपतिस्मा के साथ प्रत्यक्षतया पहचाना गया है, जो उनके 'मरण, समाधि और पुनरुत्थान' का प्रतीक है। वह बपतिस्मा उस पवित्र 1,260-दिवसीय अवधि का अल्फा था, जिसकी परिणति उनके 'मरण, समाधि और पुनरुत्थान' पर हुई; और वही 'मरण, समाधि और पुनरुत्थान' उन 1,260 दिनों का ओमेगा था।

पेन्तेकोस्तीय काल के अंत में स्थित त्रि-चरणीय मार्गचिह्न को भविष्यवाणीगत अनुप्रयोग द्वारा पहचाना जाना आवश्यक है। पेन्तेकोस्तीय काल के पचास दिनों में वही संरचना आरंभ और समापन, दोनों पर पाई जाती है। उस सिद्धांत के आधार पर कि मसीह सदा आरंभ के द्वारा अंत का चित्रण करते हैं, हम तुरहियों का पर्व, उसके बाद स्वर्गारोहण, उसके बाद प्रायश्चित्त का दिन, और उसके पश्चात् पाँच दिन को एक 'त्रि-चरणीय मार्गचिह्न जिसके बाद पाँच दिन' के रूप में पहचान सकते हैं।

हम प्रस्तावित तीन चरणों को भी तीनों में से प्रत्येक चरण की विशेषताओं के संबंध में बाइबिलीय दिशा-निर्देशों के आलोक में परखते हैं। ये तीनों चरण परमेश्वर के वचन में बारंबार निरूपित किए गए हैं। वे तीन स्वर्गदूत हैं; वे प्रांगण,

पवित्र स्थान और परमपवित्र स्थान हैं; वे पवित्र आत्मा का वह कार्य हैं जो पाप, धार्मिकता और न्याय के विषय में दोषी ठहराता है। तुरहियों का पर्व, स्वर्गारोहण और प्रायश्चित्त का दिन को उन तीन चरणों के रूप में पहचानना यह अपेक्षा करता है कि प्रत्येक चरण स्थापित बाइबिलीय साक्ष्य के अनुरूप हो।

तुरहियाँ एक चेतावनी-संदेश हैं, और यह उस पहले स्वर्गदूत से संबद्ध है जो पुकारता है, "परमेश्वर का भय मानो।" मसीह का स्वर्गारोहण उसके द्वितीय आगमन की महिमा का प्रतीक है, क्योंकि पहले स्वर्गदूत की दूसरी उद्घोषणा है, "उसकी महिमा करो।" प्रायश्चित्त का दिन न्याय का प्रतीक है, और पहले स्वर्गदूत की तीसरी उद्घोषणा है, "उसके न्याय का समय आ पहुँचा है।" कई प्रकार से यह पहचाना जा सकता है कि पेन्टेकोस्ट की अवधि के अंत के उस मार्गचिह्न में निहित तीन चरणों की भविष्यसूचक विशेषताएँ अनन्त सुसमाचार के तीन चरणों का प्रतिनिधित्व करती हैं, जहाँ बहुतेरे "शुद्ध किए जाते, शुभ्र बनाए जाते और परखे जाते हैं।"

ऐसा होने पर, आप यह देख सकते हैं कि तीन चरणों के क्रम के प्रथम मार्ग-चिह्न पर जौ के प्रथम-फलों का अर्पण किया जाता है, और उन्हीं तीन चरणों के अंतिम मार्ग-चिह्न पर गेहूँ के प्रथम-फलों का अर्पण किया जाता है। तब आप यह देख सकते हैं कि पिन्तेकुस्त काल के अल्फा के तीन चरण खमीररहित रोटी को चिह्नित करते हैं, परंतु उन्हीं तीन चरणों का ओमेगा मार्ग-चिह्न खमीरयुक्त रोटी को चिह्नित करता है। आप यहाँ तक कि यह देख सकते हैं कि आरम्भ के तीन-चरण मार्ग-चिह्न पर मसीह सब मनुष्यों को अपनी ओर खींच लेने के लिए ऊँचा किया गया, और समापन के तीन-चरण मार्ग-चिह्न पर अन्यजातियों को अपनी ओर खींच लेने के लिए एक लाख चवालीस हजार का ध्वज ऊँचा किया जाता है।

भविष्यवाणी के स्तर पर प्रथम और तृतीय स्वर्गदूत एक ही स्वर्गदूत हैं, क्योंकि प्रथम आरंभ है—और तृतीय समापन। अल्फा, प्रथम स्वर्गदूत, न्याय के उद्घाटन की घोषणा करता है और ओमेगा, अंतिम स्वर्गदूत, न्याय के समापन की घोषणा करता है। प्रथम स्वर्गदूत के संदेश को 11 अगस्त, 1840 को इस्लाम की परिपूर्ति से सामर्थ्य मिला, और तृतीय स्वर्गदूत को 9/11 को इस्लाम की एक परिपूर्ति से सामर्थ्य मिला। बहन वाइट हमें सूचित करती हैं कि प्रथम और तृतीय दोनों स्वर्गदूतों का कार्य पृथ्वी को उसकी महिमा से आलोकित करना था। अन्य साक्षी प्रचुर मात्रा में हैं, और वे मसीह के पुनरुत्थान से पिन्तेकुस्त तक के पचास दिनों में प्रतिपादित पिन्तेकुस्त के काल की संरचना की पहचान के लिए, लैव्यव्यवस्था अध्याय तेईस के प्रथम बाईस पदों तथा लैव्यव्यवस्था अध्याय तेईस के अंतिम बाईस पदों के साथ, पर्याप्त समर्थन प्रदान करते हैं। उन दो मार्गचिह्नों के बीच—जो तीन चरणों का मार्गचिह्न हैं और जिनके बाद पाँच दिन आते हैं—तीस दिनों की एक अवधि है, जो दूसरे स्वर्गदूत का प्रतिनिधित्व करती है।

‘तीन चरण, उसके बाद पाँच’ दिनों का पहला मार्गचिह्न पहला स्वर्गदूत है, तीस दिन दूसरा स्वर्गदूत है, और ‘तीन चरण, उसके बाद पाँच’ दिनों का दूसरा मार्गचिह्न तीसरा स्वर्गदूत है। ये तीनों चरण पिन्तेकुस्त तक के समूचे पिन्तेकुस्तीय काल को आवृत करते हैं; और पिन्तेकुस्त तब झोंपड़ियों के पर्व के सात दिनों के आरम्भ को चिह्नित करता है, जो रविवार-कानून संकट के दौरान होने वाली अन्तिम वर्षा के उंडेले जाने का प्रतिनिधित्व करता है; यह संकट संयुक्त राज्य अमेरिका में रविवार-कानून से आरम्भ होकर तब तक चलता है जब तक मीकाएल खड़ा नहीं हो जाता और मनुष्य की अनुग्रह-अवधि समाप्त नहीं हो जाती। यह संरचना दैवीय है, परन्तु यह कुछ गम्भीर विचारणाएँ उत्पन्न करती है।

गंभीर विचार

यह स्पष्ट है कि ‘नरसिंगे, स्वर्गारोहण और न्याय’ जिसका प्रतिनिधित्व करते हैं, वह मार्गचिह्न लिटमस-परीक्षा तथा तीसरी परीक्षा है। तीसरी परीक्षा सदा ही लिटमस-परीक्षा होती है, जहाँ चरित्र प्रकटित होता है, परन्तु कभी विकसित नहीं होता।

“संकट के द्वारा चरित्र प्रकट होता है। जब गंभीर स्वर ने आधी रात को यह उद्घोषणा की, ‘देखो, दूल्हा आ रहा है; उसके स्वागत के लिये बाहर निकलो,’ तब सोई हुई कुँवारियाँ अपनी नींद से जाग उठीं, और यह देखा गया कि

उस घटना के लिये किसने तैयारी की थी। दोनों दल अनपेक्षित रूप से पकड़े गए, परन्तु एक आपातस्थिति के लिये तैयार था, और दूसरा बिना तैयारी के पाया गया। परिस्थितियों के द्वारा चरित्र प्रकट होता है। आपातस्थितियाँ चरित्र की वास्तविक धातु को उजागर कर देती हैं। कोई अचानक और अप्रत्याशित विपत्ति, शोक, या संकट, कोई अनपेक्षित बीमारी या पीड़ा, कोई ऐसी बात जो आत्मा को मृत्यु के आमने-सामने ला खड़ा करे, चरित्र की सच्ची आन्तरिकता को प्रकट कर देगी। यह प्रकट कर दिया जाएगा कि परमेश्वर के वचन की प्रतिज्ञाओं पर वास्तविक विश्वास है या नहीं। यह प्रकट कर दिया जाएगा कि आत्मा अनुग्रह के द्वारा स्थिर रखी जाती है या नहीं, कि दीपक के साथ पात्र में तेल है या नहीं।”

“परीक्षा के समय सब पर आते हैं। परमेश्वर की परीक्षा और जाँच के अधीन हम अपना आचरण कैसे करते हैं? क्या हमारे दीपक बुझ जाते हैं? या हम उन्हें अब भी जलाए रखते हैं? जो अनुग्रह और सत्य से परिपूर्ण है, उसके साथ अपने संबंध के द्वारा क्या हम प्रत्येक आकस्मिक परिस्थिति के लिए तैयार रहते हैं? पाँच बुद्धिमान कुँवारियाँ अपना चरित्र पाँच मूर्ख कुँवारियों को प्रदान नहीं कर सकीं। चरित्र हम में से प्रत्येक को व्यक्तिगत रूप से स्वयं बनाना चाहिए।” Review and Herald, October 17, 1895.

जब तुरहियों के पर्व का मार्गचिह्न आ पहुँचता है, तब तुम्हारा चरित्र सदा के लिए मुहरबंद हो जाता है, तुम एक ध्वज के समान ऊँचा उठाए जाते हो, और तुम्हारे पाप सदा के लिए मिटा दिए जाते हैं। तीन चरण, मुहरबंदी के तीन पहलुओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। आधी रात की पुकार के संदेश का आगमन उन लोगों को प्रकट करता है जिनके पास तेल है, और जिनके पाप हटाए जाने पर वे एक ध्वज के समान ऊँचा उठाए जाते हैं। संदेश, कार्य और मुहर, ये सब एक ही मार्गचिह्न हैं। यह ऐसा मार्गचिह्न है जो "आत्मा को मृत्यु के आमने-सामने ला खड़ा करता है" क्योंकि एक "अनपेक्षित विपत्ति" के कारण। इस्लाम की तुरही उस "अनपेक्षित विपत्ति" का प्रतिनिधित्व करती है। उस समय "देखो, दूल्हा आता है" का संदेश, रविवार के कानून से पाँच दिन पहले उद्घोषित किया जाता है, जहाँ वह संदेश तीसरे स्वर्गदूत की प्रबल पुकार में परिवर्तित हो जाता है।

मार्गचिह्न के तीन चरण, रविवार-कानून से ठीक पहले, एक लाख चवालीस हज़ार की मुहरबंदी और उनके उठाए जाने के पहचानसूचक तत्त्व हैं। यह स्पष्ट है कि 'तूरियाँ, आरोहण और न्याय' की कसौटी का प्रतिनिधित्व एक्सेटर कैम्प-मीटिंग ने किया है। प्रायश्चित्त-दिवस और पेन्तेकोस्त के बीच के पाँच दिन, 17 अगस्त को एक्सेटर कैम्प-मीटिंग के समापन से लेकर 22 अक्टूबर, 1844 तक—जब द्वार बंद हो गया—के बीच के छियासठ दिनों का प्रतिनिधित्व करते हैं। मिलेराइट इतिहास के वे छियासठ दिन अंतिम दिनों को दर्शाते हैं, और इसी संदर्भ में वे एक लाख चवालीस हज़ार द्वारा मध्यरात्रि की पुकार के संदेश की उद्घोषणा को भी दर्शाते हैं।

पिन्तेकुस्त तक के पाँच दिन, मिलरवादियों द्वारा 'आधी रात की पुकार' का संदेश छियासठ दिनों तक उद्घोषित किए जाने के अनुरूप हैं; जिसका प्रतिरूप मसीह के यरूशलेम में विजय-प्रवेश द्वारा भी प्रस्तुत किया गया था। तीन चरणों में प्रथम चरण 'तुरहियों का पर्व' है, जो सातवीं तुरही, अथवा तृतीय 'हाय', अथवा अन्त के दिनों में इस्लाम, के तुल्य है; और मसीह के विजय-प्रवेश से पूर्व एक गधे का बंधन खोला गया था।

भविष्यवाणात्मक रूप से यह इंगित करता है कि गधे को खोला जाना विजयी प्रवेश के आरम्भ को चिह्नित करता है, जो कि 'आधी रात की पुकार' है। अन्तिम दिनों में बाइबिलीय भविष्यवाणी को बाइबिलीय भविष्यवाणी के छोटे राज्य—पृथ्वी से निकलनेवाला पशु, अर्थात् संयुक्त राज्य अमेरिका—पर लागू किया जाना है। इस्लाम संयुक्त राज्य अमेरिका पर प्रहार करेगा, जैसा उसने 9/11 को किया था; इस प्रकार इस्लाम द्वारा संयुक्त राज्य अमेरिका पर एक महत्त्वपूर्ण प्रहार के साथ 'आधी रात की पुकार' की उद्घोषणा का आरम्भ चिह्नित होगा, और इस्लाम द्वारा संयुक्त राज्य अमेरिका पर एक अन्य महत्त्वपूर्ण प्रहार के साथ 'आधी रात की पुकार' की उद्घोषणा का समापन चिह्नित होगा, क्योंकि यीशु सदा किसी बात के अन्त को उसके प्रारम्भ के द्वारा दर्शाता है।

पिन्तेकुस्त का संदेश प्रबल पुकार का ही संदेश है, और प्रबल पुकार आधी रात की पुकार के संदेश का मात्र एक और तीव्रतर रूप है। मिलरवादी इतिहास में आधी रात की पुकार उस समय समाप्त हुई जब 22 अक्टूबर, 1844 को द्वार

बन्द हो गया, और अन्तिम दिनों में यह तब समाप्त होगी जब रविवार के कानून के समय द्वार बन्द होगा। पिन्तेकुस्त पर पतरस ने योएल का संदेश उद्धोषित किया, और पिन्तेकुस्त आधी रात की पुकार का ओमेगा-समापन है; अतः आधी रात की पुकार के अल्फा-आरम्भ में भी पतरस को भविष्यद्वाणीगत अनिवार्यता के कारण योएल का संदेश प्रस्तुत करना था। आधी रात की पुकार के समय पतरस प्रेरितों के काम अध्याय दो में है: दिन के तीसरे पहर वह ऊपरी कोठरी में है, और फिर उसी दिन नौवें पहर वह मन्दिर में योएल का संदेश घोषित कर रहा है।

पिन्तेकुस्त, जो मध्यरात्रि की पुकार का अंत है, के समय पतरस एक लाख चवालीस हज़ार का प्रतीक है; और वह मध्यरात्रि की पुकार की शुरुआत में भी एक लाख चवालीस हज़ार का प्रतीक है। एक लाख चवालीस हज़ार का मुद्रांकन और उत्थान, जब इस्लाम प्रहार करता है, गधे के बंधन-मुक्त किए जाने के साथ आरंभ होता है। जब मिलरवादी एक्सेटर कैम्प-मीटिंग से निकले, तो उन्होंने संदेश को ज्वारीय तरंग की भाँति फैलाया, और प्रतीकात्मक रूप से उन एक लाख चवालीस हज़ार का प्रतिरूप ठहरे जो उस अनुभव की पुनरावृत्ति करते हैं।

यह अनुप्रयोग तब और अधिक गंभीर हो जाता है जब आप यह पहचानते हैं कि पतरस पिन्तेकुस्त के काल के लिटमस-परीक्षण तथा तृतीय परीक्षण में मध्यरात्रि की पुकार का संदेश प्रचार करने वालों का प्रतिनिधित्व करता है। पिन्तेकुस्त के समय दिन के तीसरे घंटे पतरस ऊपरी कोठरी में था, और ऊपरी कोठरी वही स्थान है जहाँ पिन्तेकुस्त से पहले के दस दिन बिताए गए थे। पिन्तेकुस्त के काल की दूसरी परीक्षा, आधारभूत परीक्षा के बाद आने वाला तीस दिनों का मन्दिर-परीक्षण है। मन्दिर की दूसरी परीक्षा यह अपेक्षा करती है कि विश्वासयोग्यजन विश्वास के द्वारा परमपवित्र स्थान में प्रवेश करें, जहाँ उनके पाप मिटाए जाते हैं, और जहाँ वे विश्वास से मसीह के साथ स्वर्गीय स्थानों में बिठाए जाते हैं। प्रेरितों के काम की पुस्तक हमें बताती है कि पतरस ने योएल की पुस्तक पर अपना उपदेश दिन के तीसरे घंटे ऊपरी कोठरी में आरम्भ किया, फिर नौवें घंटे वह मन्दिर में था।

परन्तु पतरस, ग्यारह के साथ खड़ा होकर, अपना स्वर ऊँचा करके उनसे कहा, हे यहूदिया के पुरुषों, और तुम सब जो यरूशलेम में बसते हो, यह तुम्हें विदित हो, और मेरे वचनों पर ध्यान दो: क्योंकि जैसे तुम समझते हो, ये मद्यप नहीं हैं; क्योंकि अभी तो दिन का केवल तीसरा घण्टा है। परन्तु यह वही है जो भविष्यद्वाक्ता योएल के द्वारा कहा गया था। ... अब पतरस और यूहन्ना प्रार्थना के समय, जो नौवाँ घण्टा था, एक साथ मन्दिर में गए। प्रेरितों के काम 2:14-16; 3:1.

तीसरे पहर मसीह को क्रूस पर कीलों से जड़ा गया, और नौवें पहर उन्होंने प्राण त्याग दिए। उनकी मृत्यु, दफ़न और पुनरुत्थान—ये तीनों मिलकर एक ही मार्गचिह्न के तीन चरण हैं। तीसरा चरण, प्रथम फलों का दिन, उन पचास दिनों का आरम्भ करता है जो पिन्तेकुस्त के दिन समाप्त होते हैं। पिन्तेकुस्त के काल के अल्फ़ा में तीसरा और नौवाँ पहर एक स्पष्ट विरोधाभास का प्रतिनिधित्व करते हैं, क्योंकि तीसरे पहर मसीह जीवित थे और नौवें पहर मृत। तीसरे पहर पतरस ऊपरी कोठरी में था और नौवें पहर मंदिर में।

मसीह के समय में पचास पवित्र दिनों का पिन्तेकुस्त काल तेईस सौ वर्षों की भविष्यवाणी से प्रत्यक्ष रूप से संबद्ध एक पवित्र भविष्यवाणात्मक अवधि था। यह विशेष रूप से दानियेल नौ में यहूदी राष्ट्र के लिए चार सौ नब्बे वर्षों के अंतिम सप्ताह से जुड़ा हुआ था। वह पवित्र सप्ताह, जिसमें मसीह ने वाचा की पुष्टि की, 1,260 भविष्यवाणात्मक दिनों के दो समान कालखंडों में विभाजित था। उस सप्ताह का केन्द्रीय बिंदु क्रूस था। क्रूस तीसरे और नौवें पहर को चिह्नित करता है, और पिन्तेकुस्त पर पतरस भी उसी प्रकार करता है। सन् 34 में, उसी पवित्र सप्ताह के अंत में, जब कर्नेलियुस ने कैसरिया मरितिमा से पतरस को बुलवाया, वह नौवाँ पहर था।

कैसरिया में कुर्नेलियुस नाम का एक मनुष्य था, जो इतालवी कहलाने वाली पलटन का एक शतपति था। वह एक भक्तिपरायण मनुष्य था, और अपने सारे घराने समेत परमेश्वर से डरता था; जो लोगों को बहुत दान देता था और सदैव परमेश्वर से प्रार्थना करता था। दिन के नौवें पहर के लगभग उसने एक दर्शन में स्पष्ट देखा कि परमेश्वर का एक दूत उसके पास आकर उससे कह रहा है, “कुर्नेलियुस।” उसने उसे देखा तो वह भयभीत हो गया और कहा, “हे प्रभु, क्या है?” उसने उससे कहा, “तेरी प्रार्थनाएँ और तेरे दान परमेश्वर के सामने स्मरण के लिए पहुँचे हैं।

और अब तू याफा में कुछ जन भेज, और शमौन नामक एक पुरुष को बुलवा, जिसका उपनाम पतरस है।”
प्रेरितों के काम 10:1-5.

दूसरे दिन, पतरस छठे घंटे के लगभग प्रार्थना करने के लिए छत पर चढ़ता है.

दूसरे दिन, जब वे अपनी यात्रा पर चलते हुए नगर के निकट आ पहुँचे, तो लगभग छठे घंटे के समय पतरस प्रार्थना करने को घर की छत पर चढ़ गया; और वह अत्यन्त भूखा हो गया और कुछ खाना चाहता था; परन्तु जब वे तैयारी कर रहे थे, तब वह ध्यानावस्था में पड़ गया, और उसने देखा कि स्वर्ग खुल गया है, और एक पात्र उसके पास उतर रहा है, मानो कोई बड़ा चादर चारों कोनों से बँधा हुआ हो, और पृथ्वी पर उतारा जा रहा हो; जिसमें पृथ्वी के सब प्रकार के चौपाये जन्तु, और वन-पशु, और रेंगनेवाले जन्तु, और आकाश के पक्षी थे। और उस से यह वाणी हुई, 'उठ, पतरस; मार और खा।' परन्तु पतरस ने कहा, 'कदापि नहीं, प्रभु; क्योंकि मैंने कभी कोई ऐसी वस्तु नहीं खाई जो सामान्य या अशुद्ध हो।' फिर दूसरी बार उस से यह वाणी हुई, 'जिसे परमेश्वर ने शुद्ध ठहराया है, उसे तू सामान्य न कह।' यह बात तीन बार हुई; और वह पात्र फिर स्वर्ग में उठा लिया गया। प्रेरितों के काम 10:9-16.

पतरस को कैसरिया आने का आह्वान नौवें घंटे पर होता है, जब एक स्वर्गदूत कुर्नेलियुस को संबोधित करने के लिए आता है। कुर्नेलियुस परमेश्वर की अन्य संतानों का प्रतिनिधित्व करता है, जिन्हें रविवार के विधान के समय बाबुल से निकल आने के लिए बुलाया जाता है। रविवार के विधान के समय जो स्वर्गदूत आता है, वह प्रकाशितवाक्य अठारह की दूसरी वाणी है, जो अब भी बाबुल में हैं, उन्हें भाग निकलने के लिए बुलाती है। पतरस एक लाख चवालीस हज़ार हैं, और कुर्नेलियुस ग्यारहवें घंटे के मजदूर हैं, जिन्हें पतरस के समक्ष अशुद्ध पशुओं के रूप में दर्शाया जाता है। पतरस और कुर्नेलियुस का संबंध वही है जो प्रकाशितवाक्य अध्याय सात में है, जहाँ एक लाख चवालीस हज़ार की पहचान एक बड़ी भीड़ के साथ संबंध में की जाती है। पतरस को तीन बार यह आज्ञा दी गई: उठ, मार और खा। एक लाख चवालीस हज़ार के रूप में, कुर्नेलियुस का यह आह्वान वही बिंदु है जहाँ पताका को उठाने की आज्ञा दी जाती है।

कुर्नेलियुस कैसरिया मारीतिमा में स्थित है, जिसे कभी-कभी "समुद्र के किनारे का कैसरिया" कहा जाता है। प्रकाशितवाक्य सत्रह हमें बताता है कि "वे जल" "लोगों, भीड़ों, जातियों और भाषाओं" हैं। ये जल परमेश्वर की कलीसिया के बाहर वालों का द्योतक हैं, और प्रकाशितवाक्य में, तथा पतरस के अशुद्ध पशुओं के दर्शन में भी, संख्या "चार" सम्पूर्ण संसार का प्रतिनिधित्व करती है। पतरस के दर्शन में चार विभिन्न पशु हैं, और वे एक चादर में नीचे उतारे जाते हैं, जो अपने चारों कोनों से थामी हुई है। पतरस का कुर्नेलियुस से संबंध भी नूह और उन पशुओं द्वारा निरूपित होता है जो जहाज़ पर चढ़े थे।

पतरस योप्पा में था, जिसका अर्थ 'उज्ज्वल और सुन्दर' है, क्योंकि एक लाख चवालीस हज़ार के प्रतीक के रूप में पतरस अन्यजातियों के लिए उज्ज्वल और सुन्दर ध्वज है। नवें पहर में अन्यजाति जन उस ध्वज के प्रति जागृत होते हैं, जिसे सिस्टर व्हाइट सब्त, परमेश्वर की व्यवस्था, तीसरे स्वर्गदूत का सन्देश, तथा समस्त विश्व के वे मिशनरी जो अन्तिम दिनों का सन्देश लिए हुए हैं—इनके रूप में पहचानती हैं। समुद्र के किनारे स्थित कैसरिया में नवें पहर जब स्वर्गदूत आया, तब कुर्नेलियुस उस ध्वज के प्रति जागृत हुआ। तब पिन्तेकुस्तीय रविवार के क़ानून के समय वह सन्देश संसार, अर्थात् समुद्र, तक पहुँचता है।

ध्वज का ऊँचा उठाया जाना इस प्रकार भी प्रस्तुत किया गया है कि प्रभु का भवन पर्वतों से ऊपर उठा दिया गया है; और पतरस सुन्दर, दीप्तिमान नगर योप्पा में घर की छत पर, छठे घंटे में—नौवें घंटे के रविवार-विधान से ठीक पहले—प्रार्थना कर रहा था। जब एक लाख चवालीस हज़ार पर मुहर लगा दी जाएगी, तब जगत के भीतर के संकट की परिस्थितियाँ परमेश्वर की उन अन्य सन्तानों को, जो अभी भी बाबुल में हैं, प्रकाश की खोज करने के लिए आकर्षित करेंगी। उनका मार्गदर्शन इस प्रकार किया जाता है कि वे योप्पा में घर की छत पर पतरस को पा लें।

मत्ती अध्याय सोलह में पतरस कैसरिया फिलिप्पी में भी उपस्थित था। हर्मोन पर्वत की तलहटी में स्थित कैसरिया फिलिप्पी का नाम समुद्रतटीय कैसरिया के समान था, परन्तु दोनों में स्पष्ट विरोध था, क्योंकि एक नगर स्थलवर्ती था

और दूसरा समुद्रतटीय। मसीह का तीसरे घंटे क्रूस पर चढ़ाया जाना और नौवें घंटे उनकी मृत्यु, जीवन और मृत्यु के स्पष्ट विरोधाभास को निरूपित करता है। पिन्तेकुस्त के तीसरे और नौवें घंटे में पतरस का संदर्भ ऊपरी कोठरी से मन्दिर तक के एक स्पष्ट अंतर को चिह्नित करता है। स्थलवर्ती कैसरिया हो या समुद्रतटीय कैसरिया—यह तीसरे और नौवें घंटे के आवश्यक भविष्यवाणीगत विरोध का प्रतिनिधित्व करता है; परन्तु जब पतरस कैसरिया फिलिप्पी में था, तब तीसरे घंटे का कोई प्रत्यक्ष उल्लेख नहीं है। दो या तीन की साक्षी से कोई बात स्थापित होती है; और क्रूस के तीसरे तथा नौवें घंटे में, तथा पिन्तेकुस्त के दिन भी, दोनों चित्रण एक ही व्यक्ति द्वारा प्रदर्शित होते हैं—चाहे मसीह जीवित हों या समाधि में, अथवा पतरस ऊपरी कोठरी में हो या मन्दिर में।

दो कैसरिया में तीसरे और नौवें घंटे के विषय का तीसरा साक्ष्य, दोनों ही प्रसंगों में पतरस को मुख्य पात्र ठहराता है, जैसा कि पिन्तेकोस्त के काल के आरंभ में मसीह थे और उसी काल के अंत में पतरस थे। तीसरे घंटे का 'अल्फ़ा'-पात्र वही है जो नौवें घंटे का 'ओमेगा'-पात्र है; यह इस बात का एक साक्ष्य देता है कि दो कैसरिया में से 'अल्फ़ा' कैसरिया, कैसरिया फ़िलिप्पी है। दूसरा साक्ष्य यह है कि दोनों नगरों का नाम एक ही है, अतः मुख्य पात्र का नाम और नगर का नाम एक ही है। तीसरा साक्ष्य भूमि और समुद्र की विपरीतता है। जब पतरस कैसरिया फ़िलिप्पी में था, तब तीसरा घंटा था। यहीं से संदेश और भी गंभीर हो जाता है।

एक ही नाम वाले दो नगरों का आपस में मिलान करना उचित है—और हम यही कर रहे हैं—पर हम अनुप्रयोग में तृतीय और नवम घंटे का समावेश भी कर रहे हैं, क्रूस पर मसीह के साक्ष्य और पेन्तेकुस्त पर पतरस के साक्ष्य के आधार पर। तीन रेखाओं को एक साथ लाकर—मसीह का तृतीय और नवम घंटा, पेन्तेकुस्त पर पतरस का तृतीय और नवम घंटा—हम कैसरिया फिलिप्पी में तृतीय घंटे को स्थापित करते हैं। यही भविष्यवाणी-संबंधी तर्क कोर्नेलियुस के नवम घंटे, पतरस के षष्ठ घंटे, और फिर कैसरिया फिलिप्पी में पतरस के तृतीय घंटे पर भी लागू किया जाना है।

पतरस तीनों मार्गचिह्नों पर है; कुर्नेलियुस षष्ठ और नवम प्रहर में पतरस के साथ है, पर तृतीय प्रहर में कैसरिया-फिलिप्पी में नहीं। यह रेखा एकसूत्र में बँधी है, क्योंकि क्रम के प्रत्येक चरण—कैसरिया-फिलिप्पी से योप्पा और वहाँ से कैसरिया मरितिमा—क्रमशः तृतीय, षष्ठ और नवम प्रहर से संबद्ध हैं। दोनों कैसरिया नगरों की सांस्कृतिक जड़ें यूनान तथा रोम, दोनों से संबद्ध थीं; किन्तु कैसरिया-फिलिप्पी की विशिष्टता यह थी कि वह दूरस्थ, रहस्यवादी बहुदेववाद का साकार रूप था, और समुद्र-तटीय कैसरिया एक वाणिज्यिक तथा प्रशासनिक केंद्र था, जो यूनानी संस्कृति को रोमी शासन-व्यवस्था के साथ समन्वित करता था। कैसरिया-फिलिप्पी कलीसियाई शासन-कला का, और कैसरिया मरितिमा राजकीय शासन-कला का प्रतीक था।

कैसरिया से कैसरिया की रेखा में, योप्पा तीन सोपानों का मध्य सोपान है। वे तीन सोपान तृतीय, षष्ठ और नवम घड़ी द्वारा प्रतीकित हैं। नवम घड़ी पर समुद्र-तटीय कैसरिया वह रविवार का कानून है, जब सुसमाचार अन्यजातियों के पास जाता है। उससे तीन घड़ी पूर्व, षष्ठ घड़ी में, पतरस योप्पा में है, जो एक तेजस्वी और दीप्तिमान नगर है। उससे भी तीन घड़ी पूर्व, तृतीय घड़ी में, पतरस तुरही के पर्व में है। कैसरिया से कैसरिया का अन्तराल आधी रात की पुकार का काल है। पतरस उन लोगों का प्रतिनिधित्व करता है जो आरम्भ से लेकर अन्त तक आधी रात की पुकार का उद्घोष करते हैं, क्योंकि यीशु सदा आरम्भ को अन्त के साथ संरेखित करता है। आधी रात की पुकार का आरम्भ तुरही के पर्व के मार्गचिह्न पर गदहे का बंधन खोले जाने से होता है, जहाँ पतरस योएल का संदेश घोषित कर रहा है।

पतरस तुरहियों के पर्व, स्वर्गारोहण, और उसके पश्चात् न्याय—इन तीन चरणों वाले मार्गचिह्न पर है। उस मार्गचिह्न पर, मत्ती अध्याय सोलह में, यह प्रश्न उठाया जाता है कि मसीह कौन था। पतरस का नाम परिवर्तित किया जाता है, और मसीह यह घोषित करते हैं कि इसी चट्टान पर वह अपनी कलीसिया का निर्माण करेगा। वह चट्टान, जिस पर मंदिर निर्मित है, ही नींव है; और कैसरिया फ़िलिप्पी में पतरस प्रथम स्वर्गदूत का संदेश है, जो आधारभूत संदेश है। जब पतरस अगले चरण पर, योप्पा में, पहुँचता है, तो वह वैसे ही स्वर्गारोहित होता है जैसे चालीस दिनों की आमने-सामने की शिक्षा के अंत में मसीह स्वर्गारोहित हुआ था। स्वर्गारोहण क्रूस के समानांतर भी है, जो उद्धारात्मक इतिहास का प्रधान ध्वज-चिह्न है; और क्रूस दो भागों में विभक्त है: दो चोर, परदे का फटकर परमपवित्र स्थान तक खुल जाना,

और अंधकार तथा घंटे।

अब छठे पहर से नौवें पहर तक उस सारे देश पर अन्धकार छा गया। और नौवें पहर के लगभग यीशु ने ऊँची आवाज़ में पुकारकर कहा, “एली, एली, लमा सबक्तानी?” अर्थात्, “हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया?” मत्ती 27:45, 46.

याफ़ा में, छठे घंटे, पतरस एक भविष्यवाणीगत विभाजन-बिंदु पर है—खोए हुआ और उद्धार पाए हुआ के बीच, ज्योति और अंधकार के बीच, तथा मध्यरात्रि की पुकार के आरंभ और समाप्ति के बीच। वह विभाजन एक लाख चवालीस हज़ार के लौदीकियाई आंदोलन से एक लाख चवालीस हज़ार के फिलादेल्फियाई आंदोलन में संक्रमण पर बल देता है। यह लौदीकियाई सप्तम-दिवसीय ऐडवेंटिस्ट कलीसिया की पूर्ण अस्वीकृति को चिह्नित कर रहा है। प्रायश्चित्त के दिन द्वारा निरूपित न्याय का वह बन्द द्वार पेन्टेकोस्टल रविवार के कानून से पाँच दिन पूर्व आता है। उस न्याय से पहले स्वर्गारोहण है, और उससे भी पहले नरसिंगा का संदेश। ये तीन चरण उस मार्गचिह्न को दर्शाते हैं, जहाँ परमेश्वर की मुहर अंकित की जाती है, और मध्यरात्रि की पुकार का संदेश विजयी कलीसिया द्वारा उन लोगों को घोषित किया जाता है जो कुर्नेलियुस द्वारा प्रतिनिधित्व किए गए हैं।

पतरस पिन्तेकुस्त के दिन संदेश की उद्घोषणा करता है, और पिन्तेकुस्त आधी रात की पुकार के संदेश के अन्त को चिह्नित करता है। अतः भविष्यवाणी की दृष्टि से यह अनिवार्य है कि पतरस आधी रात की पुकार की अवधि के आरम्भ में भी वही संदेश घोषित करे। आरम्भ सदैव अन्त का निरूपण करता है। जब इस्लाम का गधा बन्धनों से छोड़ दिया जाता है और संयुक्त राज्य अमेरिका पर आक्रमण करता है, जैसा कि वह रविवार के कानून के समय फिर करता है, तब पतरस का आधी रात की पुकार वाला संदेश सामर्थ्य प्राप्त करता है। पिन्तेकुस्त के तीसरे और नौवें घंटे पर पतरस द्वारा संदेश का उद्घोष करना, आधी रात की पुकार के आरम्भ और अन्त को चिह्नित करता है।

जिस रेखा पर हम विचार कर रहे हैं, उसमें चालीस दिनों की वह अवधि, जो मसीह के स्वर्गारोहण पर समाप्त होती है, उसी के साथ ऊपरी कोठरी के दस दिन भी आरंभ होते हैं। दस-दिनीय अवधि के पाँचवें दिन, प्रायश्चित्त का दिन यह प्रकट करता है कि इस्राएल के पाप मिटा दिए गए हैं और कलीसिया ने स्वयं को तैयार कर लिया है। पेन्तेकुस्त के दिन, तीसरे पहर, पतरस ऊपरी कोठरी में था। रविवार के विधान के नवें पहर पर, संदेश मध्यरात्रि से तेज़ पुकार में बदल जाता है।

पतरस द्वारा अर्धरात्रि की पुकार के संदेश की उद्घोषणा तब होती है जब वह दिन के तीसरे पहर में होता है। वह संदेश तुरहियों के पर्व—जब गधे का बन्धन खोला जाता है—और कैसरिया फिलिप्पी से चिह्नित है; और कैसरिया फिलिप्पी को पानियम भी कहा जाता है। पानियम का निरूपण दानिय्येल ग्यारह के तेरह से पंद्रह पदों में है। अर्धरात्रि की पुकार की उद्घोषणा के आरम्भ में, जब गधे का बन्धन खोला जाता है, उस समय पतरस केवल संयुक्त राज्य अमेरिका पर इस्लामी आघात की ही पहचान नहीं कर रहा, परन्तु साथ ही वह पानियम के उस युद्ध पर भी है, जो रविवार के कानून की ओर ले जाता है। पानियम का युद्ध संयुक्त राज्य अमेरिका पर इस्लामी आघात के समानान्तर एक घटना है।

हम इन बातों को अगले लेख में जारी रखेंगे।